International Journal of Creative Research and Innovation (IJCRI)
Vol-5, Issue-8, 2020 | ISSN: 2581-6829, http://www.edusanchar.com

शोध–पत्र

श्रीरामचरितमानस में निहित शैक्षिक मूल्यों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता

शोधकर्त्री
पीयूष किरण माथुर

मार्गदर्शिका
डॉ. सावित्री सिंगवाल

नीलाम्बुजश्यामल कोमलांग सीतासमारोपितवाम भागम्।
पाणौ महासायक चारू चापं नमामि रामं रघुवंशनाथम्।।

नील कमल के समान श्याम और कोमल जिनके अंग है, श्री सीताजी जिनके वाम भाग में विराजमान है और जिनके हाथों में अमोध बाण और सुन्दर धनुष है, उन रघुवंश के स्वामी श्रीरामचन्द्र जी को मैं नमस्कार करती हूँ।

मनुष्य को ईश्वर की सर्वश्रेष्ठ कृति माना गया है शिक्षा व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाने का माध्यम है। यह हमारी संवेदनशीलता और दृष्टि को प्रखर करती है जिससे राष्ट्रीय एकता बढ़ती है और समझ एवं चिंतन में स्वतंत्रता आती है। शिक्षा हमारे संविधान में प्रतिष्ठित समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता और लोकतंत्र के लक्ष्यों की प्राप्ति में हमारी सहायता करती है। किन्तु यह व्यावहारिकता और यथार्थवाद से कोसों दूर है। शिक्षा का प्रारम्भ इस लक्ष्य को लेकर हुआ कि सामाजिक दृष्टि से अच्छे इंसान तैयार हो किन्तु अब यह विकृत होकर ऐसी प्रणाली में बदल गई है, जो शरीर और बुद्धि की बात तो करती है किन्तु मनुष्य का आध्यात्मिक और भावनात्मक दृष्टि से स्पर्श नहीं करती। इसी का परिणाम है कि जीवन के आवश्यक मूल्यों का ह्रास हो रहा है और जन सामान्य का मूल्यों पर से विश्वास उठता जा रहा है।

शिक्षाक्रम में ऐसे परिवर्तन की आवश्यकता है जिससे सामाजिक और नैतिक मूल्यों के विकास में शिक्षा एक सशक्त साधन बन सके। शिक्षा में प्राचीन एवं आधुनिकता का समन्वय होना चाहिए। भौतिकता, आध्यात्मिकता, व्यवहार व सिद्धान्त का सन्तुलन होना चाहिए। शिक्षा में पारिवारिक भाव का विकास, नीति व्यवस्था, पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम का निर्धारण भी होना चाहिए। 'शिक्षा' का कार्य मानव जीवन को अधिक व्यवस्थित एवं श्रेष्ठ बनाना है। भारत में प्राचीन काल से ही शिक्षा की उत्तम व्यवस्था विभिन्न माध्यमों से की गयी है। इस दृष्टि से उपनिषदों व प्राचीन साहित्य का महत्वपूर्ण स्थान है, जिससे ज्ञान का विस्तार होता रहा है। ऐसा माना जाता है कि उपनिषदों के रहस्यपूर्ण मंत्रों को सरल भाषा में श्रीरामचरितमानस द्वारा जनता तक पहुँचाया गया है।

श्रीरामचरितमानस में केवल धार्मिक बातें ही समाविष्ट नहीं है, अपितु शैक्षिक पहलुओं पर भी समुचित चिन्तन पाया जाता है जो मानव का समुचित (सर्वांगीण) विकास कर उसे जोड़े रखने का कार्य करता है।

श्रीरामचरितमानस 15वीं शताब्दी के कवि गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखा गया महाकाव्य है। तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस के बालकाण्ड में स्वयं लिखा है कि श्रीरामचरितमानस का आरम्भ अयोध्या में विक्रम संवत् 1631 (1574 ईस्वी) को रामनवमी के दिन मंगलवार को किया था। संवत् 1633 (1576 ईस्वी) मार्गशीर्ष शुवलपक्ष में राम विवाह के दिन पूर्ण हुआ। श्रीरामचरितमानस को लिखने में गोस्वामी तुलसीदास को 2 वर्ष 8 माह 26 दिन का समय लगा था और इस महाकाव्य की भाषा अवधी है जो कि हिन्दी भाषा की ही एक शाखा है। यह दोहा–चौपाई शैली में लिखी गई है।

श्रीरामचरितमानस में गोस्वामी तुलसीदास ने श्रीराम जी के निर्मल एवं विशद् चरित्र का वर्णन किया है जो कि आज के समय के युवाओं के लिए अत्यन्त आवश्यक प्रेरणा स्रोत है। जहाँ वाल्मीकि ने रामायण में राम को केवल एक सांसारिक व्यक्ति के रूप में दर्शाया है, वहीं तुलसीदास ने श्रीरामचरितमानस में राम को भगवान विष्णु का अवतार माना है।

श्रीरामचरितमानस ने ही श्रीराम के आदर्शों को घर–घर पहुँचाया। भारतीय संस्कृति को न केवल भारत वरन् सम्पूर्ण विश्व में इस ग्रंथ ने जीवित रखा हैं। विदेशों में बस चुके भारतीयों को अपनी जड़ों से जोड़े रखने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। श्रीरामचरितमानस सर्वांग सुन्दर, उत्तम काव्य लक्षणों से युक्त, साहित्य के सभी रसों का आस्वादन कराने वाला, काव्य कला की दृष्टि से सर्वोच्च कोटि, आदर्श गार्हस्थ्य जीवन, आदर्श राजधर्म, आदर्श पारिवारिक जीवन, आदर्श पतिव्रत धर्म, भ्रातृधर्म के साथ भक्ति, ज्ञान, त्याग, वैराग्य तथा सदाचार की शिक्षा देने वाला, सगुण साकार भगवान की आदर्श मानव लीला व्यक्त करने वाला अद्वितीय ग्रंथ है।

श्रीराम का जीवन ऐसा आदर्श है जिसमें एक भारतीय को कैसा जीवन जीना चाहिए, उसका दैनन्दिन आचरण कैसा होना चाहिए तथा पारिवारिक जीवन में किन मर्यादाओं का पालन करते हुए, विभिन्न आश्रमों का निर्वाह कर अपनी जीवन यात्रा आगे बढ़ानी चाहिए, यह सब देखने को मिलता है। छोटी–छोटी चौपाइयों के माध्यम से पूरा जीवन दर्शन, आदर्श व्यक्तित्व के निर्माण की विधा, परिवार के संचालन से लेकर अनीति से लड़ते हुए देवत्व की रक्षा का, संघ शक्ति के महत्व का शिक्षण दिया गया है।

रामचरितमानस में जहाँ धर्मतंत्र रूपी दंड का राजतंत्र रूपी व्यवस्था तंत्र पर पूर्ण नियंत्रण बताया गया है। वहाँ आदर्श गुरु शिष्य परम्परा व शिष्य धर्म के निर्वाह को भी समझाया गया है। भ्रातृ धर्म का निर्वाह करना, संयुक्त परिवार प्रथा, पिता की आज्ञा का शिरोधार्य पालन, भौतिक जगत के प्रलोभन छोड़कर तप–तितिक्षा को जीवन का अंश बनाना रामचरितमानस से ही सीखा जा सकता है। लक्ष्मण का कर्तव्य पालन कठोर तप, श्रीराम का हर जाति–वर्ग–वर्ण के व्यक्ति से अनन्य प्रेम, असुरता का मर्दन आदि प्रेरणाऐं आज भी प्रासंगिक है।

सामाजिक दृष्टि से यह पति–पत्नी के सम्बन्ध, पिता पुत्र के कर्तव्य, गुरू–शिष्य का पारस्परिक व्यवहार, भाई का भाई के प्रति कर्तव्य, व्यक्ति का समाज के प्रति उत्तरदायित्व, माता–पिता, पत्नी, पुत्र, भाई, पति के आदर्श को बखूबी प्रस्तुत करती है। सांस्कृतिक दृष्टि से यह रामराज्य का आदर्श, वानर आदि जातियों में आर्य संस्कृति का प्रसार, नैतिकता, सत्य के प्रति निष्ठा और कर्तव्य के लिए त्याग का आदर्श चित्रण करती है।

संदर्भ ग्रंथ

1. गोस्वामी तुलसीदास (1965), श्रीरामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर।
2. पटेल, प्रफुल्ल एम. (2013), श्रीरामचरितमानस का वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन।
3. रैना, शीला (2015), श्रीरामचरितमानस व रामावतार चरित का तुलनात्मक अध्ययन।
4. स्वामी रामसुख दास, मानव में नाम वन्दना।
5. राधेश्याम खेमका, कल्याण (रामभक्ति अंक)
6. सिंह अमिता रानी, रामचरितमानस में जीवन मूल्य
7. चरणदास शर्मा, तुलसीदास के काव्य में नैतिक मूल्य।
8. चक्रवर्ती बी. (1991), रामचरितमानस में मानव मूल्य।
9. पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, रामायण की प्रगतिशील प्रेरणाएँ।
10. मो. इकरार अहमद (2014), रामचरितमानस में निहित शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता।